International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(2): 10-12

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(2): 10-12
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-01-2021
Accepted: 12-02-2021

राकेश कुमार
शोधछात्र, संस्कृत विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
राकेश कुमार
शोधछात्र, संस्कृत विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

महाकवि भारवि विरचित ''किरातार्जुनीयम्'' महाकाव्य के प्रथम सर्ग में राज–व्यवस्था का वर्णन

राकेश कुमार

प्रस्तावना

इस काव्य का कथानक महाभारत से लिया गया है। यद्यपि यह कथानक अत्यल्प ही है। पर कवि ने अपनी कल्पनाओं एवं वर्णन प्रतिभा से बहुत अधिक बढ़ा दिया है और इस महाकाव्य का विस्तार अट्ठारह सर्गो तक कर दिया है जबकि कथानक वीर रस प्रधान है–

काव्य का प्रारम्भ द्वैतवन में जहाँ कि युधिष्ठिर आदि पंच पाण्डव द्रौपदी सहित बनवास की अवधि बिता रहे थे, युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त गुप्तचर के लौट आने से होता है। घूतक्रीड़ा में पराजित होने के बाद शर्त के अनुसार यद्यपि युधिष्ठिर आदि पाण्डव वन में रह रहे थे। अतएव युधिष्ठिर ने एक किरात को गुप्तचर के रूप में नियुक्त कर दुर्योधन की राज्य स्थिति तथा उसके मनोभावों एवं भावी कार्यक्रमों का पता लगाने को भेजा था। ब्रह्मचारी के वेष में यह किरात सब पता लगाकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौटकर आया और उन्हें बतलाया कि दुर्योधन ने अपनी उत्तम शासन प्रणाली से प्रजाजनों को वश में कर लिया है। वह यथासमय पदार्थ चतुष्ठय का सेवन करता है, सेवक तथा अधीनस्थ राज्य उसका अनुवर्तन करते हैं। सेना भी सबल एवं सभी आवश्यक साधनों से परिपूर्ण है, फिर भी वह पाण्डवों से भयभीत रहता है।

द्रौपदी इस समाचार से क्रुद्ध हुई और उन्होनें युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया तथा अपनी दयनीय स्थिति का वर्णन करते हुए उनमें उत्साह जागृत करने का प्रयास किया–

भारवि कृत किरातार्जुनीयम् में निहित राज व्यवस्था से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बिन्दु है। जिन का वर्णन इस प्रकार है–

युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त गुप्तचर जब दुर्योधन की सारी राज–व्यवस्था को जानकर वापिस द्वैतवन में आता है तो वह दुर्योधन के बारे में वही कहता है जो देखकर व समझकर आया है। यहाँ पर कवि ने राज–व्यवस्था में एक हितैषी वनेचर की भूमिका का निर्वाह कर बतलाया है कि सच्चा हितैषी वनेचर वही होता है जो अपने स्वामी को शत्रु की सही दशा से अवगत कराये। अतः वह वनेचर दुर्योधन की सारी बातें सही ही बताता है और बतलाते समय वह जरा सा भी व्यथित नहीं होता है।

> कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः।
> न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।।[01]

प्रस्तुत श्लोक में महाकवि भारवि ने एक राज–व्यवस्था में एक सलाहकार और एक महाराज का महत्व बताकर एक अच्छी राज व्यवस्था का परिचालन किया है, जो सलाहकार स्वामी को सत् परामर्श नही देता, वह निन्दित व अयोग्य मन्त्री होता है। जो राजा सलाहकार के द्वारा अपनी प्रशंसा सुनता है और हितकर तथा सत्य की बात पर ध्यान नहीं देता तो वह राजा निन्दित व अयोग्य है। इसलिए राजा व सलाहकार दोनों का अनुकूल होना जिस राज व्यवस्था में होता है। वहाँ पर सारी सम्पत्तियाँ अनुराग करती हैं अर्थात स्वयं आती हैं।

> स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितात्र यः संश्रृणुते स किंप्रभुः।
> सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः।।[02]

राजा दुर्योधन राज्य करता है। वह शासन तो करता है लेकिन शासन करते समय अपने शत्रु अर्थात आप से भयभीत रहता है तथा जुए से जीती हुई भूमि को नीति से जीतना चाहता है और वह आप

से पराजय की आशंका करता रहता है। कवि ने एक शत्रु की तुलना दूसरे शत्रु से वनेचर के द्वारा की है।

विशड़्कमानों भवतः पराभवं नृपासनस्थोऽपि वनाधिवासिनः।
दुरोदरच्छद्याजितां समीहते नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः।।[03]

वनेचर दुर्योधन की राज–व्यवस्था का पता लगाकर युधिष्ठिर के पास आकर कहता है कि दुर्योधन काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं मात्सर्य इन छः को अपनाकर वह शासन करता है और प्रजा को सन्तान की तरह प्यार करता है और वह दुर्योधन दिनचर्या व रात्रिचर्या बनाकर नीति द्वारा पुरूषार्थ को बढ़ा रहा है। वह अपनी राज व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है और उसके हित के प्रति तत्पर रहता है।

कृतारिषड्वगजयेन मानवीयमगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना।
विभज्य नयक्तंदिवमस्ततन्द्रिणा वितन्यते तेन नयेन पौरूषम्।।[04]

अहंकार को त्याग कर वह दुर्योधन इस प्रकार से शासन कर रहा है कि प्रत्येक प्राणी से वह भाई जैसा व्यवहार कर रहा है और प्रत्येक प्राणी को मित्र ही मानता है मित्रों के साथ सगे भाई जैसा व्यवहार, सगे भाईयों को राजा बनाकर व्यवहार करना उसका यह व्यवहार राज व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण प्रभावी बिन्दु है। अब उसने कपट को पूर्ण रूप से त्याग दिया है और अपने कुशल व्यवहार से राज–शासन कर रहा है।

सखीनिव प्रीतियुजोअनुजीविनः समानमानान्सुहदश्च बन्धुभिः।
स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम्।।[05]

एक राजा को राज–पाठ को सुचारू रूप से चलाने के लिए कृतज्ञता होना आवश्यक है। दुर्योधन अपने चारों ओर आत्मीय रक्षकों को नियुक्त करके अपना कार्य पूर्ण करता है किसी गुप्त रहस्य को न बताने पर पुरस्कार देकर प्रसन्न रहता है। यह गुण उसकी कृतज्ञता को स्पष्ट करता है। इस प्रकार राज–व्यवस्था में राजा में यह गुण होना आवश्यक है।

विधाय रक्षान्परितः परेतरानशड़िकताकारमुपैति शड़िकतः
क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः।।[06]

वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि हे महाराज दुर्योधन ने अपनी प्रजा के लिए कल्याणकारी साधनों का सम्पादन किया है। सिंचाई के लिए कूप, तालाब एवं नहरों की सुव्यवस्था की है। जिसके परिणामस्वरूप प्रजा जन आज वर्षा के पानी पर आधारित नहीं है और सभी प्राणी सुलभ अनन्त की प्राप्ति कर के बहुत आनन्दित हो रहे हैं और अपने आप को दुर्योधन की प्रजा का जन होने पर गर्व महसूस कर रहे हैं।

सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैरकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।
वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासति।।[07]

राज–व्यवस्था में दुर्योधन कुटिल शब्दों का प्रयोग नहीं करता है न ही वह धनुष को प्रत्यच्चा युक्त करता है और न ही वह क्रोध को अपने पास लाता है। तथापि उसके गुणों के आधार पर ही सब राजा उसके शासन की व्यवस्था को माला की तरह पहन कर गर्व महसूस करते हैं।

न तेन सज्यं कचिदुद्यतं धनुः कृतं न वा कोपविजिहममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरूहयते नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्।[08]

महाकवि भारवि ने कहा है कि बलवान व्यक्ति से हमेशा मित्रता जैसा व्यवहार ही करना चाहिए, यदि वह बलवान व्यक्ति हमसे बल में अधिक है। तब– यह राज व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण गुण होता है। यह गुण किसी भी राज व्यवस्था का आधारित गुण कहलाता है। दुर्योधन समुद्रपर्यन्त शासन करता हैं अपने सारे भूमण्डल का लेकिन उसे आने वाली आपत्ति का डर हमेशा रहता है। क्योंकि वह जानता है कि बलवान के साथ विरोध करने का परिणाम बहुत भयानक होता है।

प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।
स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीरहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।।[09]

द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि हे महाराज इन्द्र के लुभ वंशज राजाओं से धारण की गई मही को आपने अपने हाथों से इस प्रकार से फेंक दिया जैसे एक उन्मत हाथी माला को फेंक देता है। क्या आप राज–व्यवस्था चलाने में असमर्थ हैं या आपके भाई और जो आप से तुच्छ हैं। हर प्रकार से उस दुर्योधन को देखो वह किस प्रकार से प्रबल बनकर अपने शासन को सुचारू रूप से चला रहा है।

अखण्डमाखण्डल तुल्यधामभिश्चिरं धृता भूपतिभिः स्ववंशजैः।
त्वयात्महस्तेन मही मदच्युता मतड़गजेन स्त्रगिवापवर्जिता।।[10]

प्रस्तुत श्लोक में कवि ने राज लक्ष्मी की तुलना एक स्त्री (द्रौपदी) से की है। वह द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि अनुकूलसहाय बाला कुलाभिमानी आपको छोड़कर कौन होगा जो अपनी वधू के समान राज लक्ष्मी को भी शत्रुओं से अपहरण कराऐगा, कोई नहीं होगा। इस प्रकार द्रौपदी अपनी खोई हुई राज–व्यवस्था को पाने के लिए युधिष्ठिर को उत्साहित कर रही है।

गुणानुरक्तामनुरक्तसाधनः कुलाभिमानी कुलजां नराधिपः।
परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेन्मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम्।।[11]

द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि जब हम राज्यकाल में अपनी राज–व्यवस्था को देख रहे थे तब यह भीम सदा रक्तचन्दन लगाने का अभ्यासी महान रथ पर चलता था किन्तु आज धूलि–भूमि वाले जंगलों में पैदल घूमता हुआ केवल सत्य को ही धन समझने वाला आप के मन को दुःखित नहीं करता है। क्या।

परिभ्रमंल्लोहितचन्दनोचितः पदातिरन्तगिरि रेणुरूषितः।
महारथः सत्यधनस्य मानसं दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः।।[12]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त गुप्तचर दुर्योधन की राज व्यवस्था का सारा वृतान्त जानकर युधिष्ठिर को सही–सही बताता है। अतः गुप्तचर में राज–व्यवस्था से सम्बन्धित निम्न गुण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। अपने राजा

के प्रति सच्चा राज–हितैषी होना, अपने व अपने राजा के लिए सही बात का सही समय पर निर्णय लेना, अपने राज्य के लिए कार्य करने वाला, ईमानदारी से राज–व्यवस्था का पालन करने वाला, सत्य बातों को संगठित करने में कुशल और हित व परिहित में भेद जानने वाला। राजा दुर्योधन अपने भाई दुशासन को युवराज बनाकर स्वयं राज–व्यवस्था को अप्रत्यक्ष रूप से देखता है। प्रत्येक व्यक्ति से मित्र जैसा व्यवहार करता है। मित्र से भाई जैसा व्यवहार करता है, अतः प्रजा का एक सन्तान की तरह पालन–पोषण करता है और अच्छे कार्य करने पर उपहार देकर प्रोत्साहित करता है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि एक अच्छी राज व्यवस्था के सम्पूर्ण गुण दुर्योधन में दिखाई देते हैं। वनेचर दुर्योधन की राजव्यवस्था से सम्बन्धित सम्पूर्ण बिन्दुओं से युधिष्ठिर को अवगत कराता है।

संदर्भ

किरातार्जुनीयम्–हिन्दी व्याख्याकारः सन्दर्भ श्रीबदरीनारायणमिश्र
1. किरातार्जुनीयम् 01/02 पृष्ठ–04
2. किरातार्जुनीयम् 01/05 पृष्ठ–06
3. किरातार्जुनीयम् 01/07 पृष्ठ–08
4. किरातार्जुनीयम् 01/09 पृष्ठ–09
5. किरातार्जुनीयम् 01/10 पृष्ठ–10
6. किरातार्जुनीयम् 01/14 पृष्ठ–13
7. किरातार्जुनीयम् 01/17 पृष्ठ–15
8. किरातार्जुनीयम् 01/21 पृष्ठ–18
9. किरातार्जुनीयम् 01/23 पृष्ठ–19
10. किरातार्जुनीयम् 01/29 पृष्ठ–22
11. किरातार्जुनीयम् 01/31 पृष्ठ–23
12. किरातार्जुनीयम् 01/34 पृष्ठ–25